स्नातक हिन्दी (प्रतिष्ठा) द्वितीय खण्ड - डॉ० मुन्ना साहू
(तृतीय पत्र - आधुनिक हिन्दी काव्य) हिन्दी विभाग
जे० के० कॉलेज

महादेवी की श्रेष्ठ रचनाएँ

महादेवी वर्मा 'आधुनिक युग की मीरा' नाम से प्रसिद्ध हैं। उन्हें 'हिन्दी के विशाल मन्दिर की वीणा पाणि' भी कहा जाता है। काव्य रचना के साथ-साथ गद्य विधा में भी उन्होंने महारत हासिल किया है। उनकी गद्य विशेषता के कारण गुलाब राय ने कहा था कि - 'मैं गद्य में महादेवी का लोहा मानता हूँ।' महादेवी वर्मा की महत्वपूर्ण काव्य कृतियाँ ~~महत्वपूर्ण~~ निम्नांकित हैं - नीहार, रश्मि, नीरजा, सांध्यगीत, यामा, दीपशिखा, सप्तपर्णा। महादेवी वर्मा के 'यामा' में नीहार, रश्मि, नीरजा और सांध्य-गीत के महत्वपूर्ण गीतों का संकलन किया गया है। 'यामा' पर महादेवी वर्मा को भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार' प्राप्त हुआ था। महादेवी वर्मा कृत 'सप्तपर्णा' में ऋग्वेद के मंत्रों का हिन्दी अनुवाद संकलित है। महादेवी वर्मा की ब्रजभाषा और आरम्भिक खड़ी बोली की कविताओं का संकलन सन् 1984 ई० में 'प्रथम आयाम' शीर्षक से प्रकाशित हुआ। उन्हें बौद्ध दर्शन से प्रभावित रहस्यवादी कवयित्री के रूप में स्वीकार किया जाता है। इनका सर्वाधिक प्रिय प्रतीक दीपक और बादल हैं।
संस्मरण और रेखाचित्र - स्मृति की रेखाएँ, अतीत के चलचित्र, पथ के साथी, मेरा परिवार।
निबंध संग्रह - शृंखला की कड़ियाँ, अबला और सबला, साहित्यकार की आस्था आदि। इनकी लेखन शैली बहुआयामी है - वर्णनात्मक शैली, विवेचनात्मक शैली, भावात्मक शैली, संवादात्मक शैली, आलंकारिक शैली, सूक्तिशैली एवं उद्धरण शैली आदि।
महादेवी वर्मा की जीवन-दृष्टि मानवीय गुणों से आबद्ध एवं संवेदनाओं से अनुप्राणित है। उनकी रचनाओं में उदात्त भाव एवं समस्त प्राणि-जगत के प्रति उनकी करुणा दृष्टिगत होती है। छायावादी भाव-बोध के लिए गीत आदर्श विधा थी। महादेवी ने अपने काव्य के लिए गीत विधा को ही चुना। वह अभिव्यक्ति के स्तर पर प्रतीक का सहारा लेती हैं।

Scanned with CamScanner